

शासकीय और अशासकीय माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामंजस्य क्षमता का अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन

Study of Cohesion Ability in Government and Non-Government Secondary Level Students, Study of Effect on Habits

Paper Id.:15637, Submission Date: 10/01/2022, Acceptance Date: 20/01/2022, Publication Date: 22/01/2022



गरिमा शर्मा
शोधार्थी,
शिक्षाशास्त्र विभाग,
श्री जगदीश प्रसाद
झाबरमल टिबड़ेवाला
विश्वविद्यालय,
झुझुनू, राजस्थान, भारत



रतन लाल भोजक
निर्देशक,
शिक्षाशास्त्र वि भाग,
श्री जगदीश प्रसाद
झाबरमल टिबड़ेवाला
विश्वविद्यालय,
झुझुनू, राजस्थान, भारत



जितेन्द्र प्रताप
सह-निर्देशक
शिक्षाशास्त्र विभाग
श्री जगदीश प्रसाद
झाबरमल टिबड़ेवाला
विश्वविद्यालय,
झुझुनू, राजस्थान, भारत

सारांश

वातावरण से तालमेल की आदत सामंजस्य क्षमता का संवर्द्धन करती है। सामंजस्य जीवन कौशल का आधार है। जो विभिन्न आयामों में सफलता के लिये परम आवश्यक है। सामंजस्य के महत्व में परिवार, विद्यालय, समाज के अतिरिक्त स्वास्थ्य और भावनात्मक सामंजस्य के स्तर को माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में निम्न स्तरीय सहसम्बन्ध पाया गया है।

वातावरण और तालमेल की क्षमता आदतों के निर्माण में सहायक होती है। आदतें व्यवहार का अंग बन जाती है। विद्यार्थी जीवन में अध्ययन की आदत महत्वपूर्ण होती है। आधुनिक वातावरण में शिक्षण की अध्ययन अध्यापन पद्धति में व्यापक परिवर्तन हुये है। अध्ययन के प्रति माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों का क्या दृष्टिकोण है एवं अध्ययन आदतों के स्तर में अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सहसम्बन्ध पाया गया है। लक्ष्य के प्रति स्पष्टता से अध्ययन के प्रति गम्भीरता बढती है उचित आदतें एवं सामंजस्य पूर्ण व्यवहार से सकारात्मक परिणाम प्राप्त होते है।

The habit of adjusting to the environment enhances the ability to harmonize. Harmony is the basis of life skills. Which is absolutely necessary for success in various dimensions. The importance of cohesion, in addition to the level of health and emotional cohesion in the family, school, society, has been found to be low-level among the secondary level students.

The environment and the ability to adjust helps in the formation of habits. Habits become part of behavior. Study habits are important in student life. In the modern environment, there has been a lot of change in the teaching method of teaching. Very low negative correlation has been found between the attitude of secondary school students towards study and the level of study habits. With clarity towards the goal, seriousness towards study increases, with proper habits and harmonious behavior, positive results are obtained.

मुख्य शब्द - सामंजस्य क्षमता, अध्ययन आदत।

Keywords - cohesion ability, study habit.

प्रस्तावना

मनुष्य अन्य जीवों से श्रेष्ठ है उसकी श्रेष्ठता का आधार उसकी विवेक क्षमता है शिक्षा ही व्यक्ति में विवेक का ज्ञान प्रदान करती है। किशोरावस्था बालक के जन्म के बाद की तीसरी अवस्था है। जो बाल्यावस्था के उत्तरार्द्ध में प्रारंभ होती है और युवावस्था के प्रारम्भ होने तक चलती है वास्तव में यह अवस्था बाल्यावस्था और युवावस्था का संधिकाल है शिक्षा विकास का वह क्रम है जो बाल्यावस्था से परिपक्वता तक चलता है और जिससे मनुष्य अपने आपको आवश्यकतानुसार धीरे-धीरे भौतिक वातावरण, सामाजिक वातावरण और आध्यात्मिक वातावरण के अनुकूल बना लेता है। किशोरावस्था बालकों के भावी जीवन की व व्यक्तित्व निर्माण की महत्वपूर्ण अवस्था है। मनुष्य की इच्छाओं और आवश्यकताओं के बीच जीवन को व्यवस्थित करने का कार्य समायोजन कहलाता है। छात्र जीवन में व्यक्तित्व के विकास के लिये कई बार परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठाना पडता है। विभिन्न क्षेत्रों में समय-समय पर उत्पन्न समस्यात्मक परिस्थितियों में सहजता से सामंजस्य स्थापित कर सकने की क्षमता सामंजस्य या समायोजन या अनुकूलन क्षमता कहलाती है। बालक की बाह्य और आन्तरिक परिस्थितियों के साथ सामंजस्य की प्रक्रिया जीवन पर्यन्त चलती रहती है। बालक के जीवन में सामंजस्य के विभिन्न आयामों का प्रभाव पडता है। और एक सन्तुलित व्यक्तित्व का निर्माण होता है।

गृह आयाम	किशोरवय बालक-बालिकाओं के परिवार की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थिति उनके बाल्यविकास पर स्पष्ट प्रभाव डालती है।
स्वास्थ्य आयाम	शक्ति से सामर्थ्य का विकास होता है। ऊर्जावान व्यक्ति आलस्य का प्रबल विरोधी और शारीरिक स्वास्थ्य का प्रबल समर्थक होता है।
विद्यालय आयाम	किशोर बालक-बालिकाओं के मानसिक विकास में उनका विद्यालय विशेष कारक का कार्य करता है विद्यालय में पाठ्यक्रम उनकी रुचि और आवश्यकता के अनुरूप होना चाहिए एवं विद्यालय में होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियायें उनके मानसिक गुणों को प्रभावित करती है।
संवेगात्मक आयाम	किशोर बालक-बालिकाओं मनः स्थिति अस्थिर होती है। संवेगों में अत्यधिक विभिन्नतायें होती है। कभी वे खिन्न और कभी उल्लास से परिपूर्ण होते हैं। किशोरों का स्वास्थ्य उनके व्यवहार को प्रभावित करता है। किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिन्ह संवेगात्मक क्रियाओं में तीव्र परिवर्तन है।
सामाजिक आयाम	किशोरावस्था में सामाजिक विकास का क्षेत्र विस्तृत हो जाता है। किशोर बालक-बालिकायें सामाजिक परिस्थितियों में अपने को व्यवस्थित करने का प्रयास करते हैं निम्न स्वरूप सामाजिक विकास में दिखाई देता है
अध्ययन आदत	<p>जब बालक वातावरण के सम्पर्क में आता है। तो कुछ क्रियाओं को वह बिना प्रयास के ही सीख जाता है एवं कुछ आदतों को दूसरे व्यक्ति बालक के जीवन में डालते हैं। अच्छी आदतों को अपने व्यवहार का अंग अभ्यास से ही बनाया जा सकता है। आदतें अपने आप पड़ जाती हैं। आदत के निर्माण में घर का वातावरण अत्यधिक योग देता है बाल्यावस्था में दूसरों की नकल करने की प्रवृत्ति होती है और यह प्रवृत्ति उसे बहुत सी आदतें सिखा देती है। किशोरवय बालक-बालिकाओं में बाल्यकाल से ही नियमित दिनचर्या की आदत डालनी चाहिए। उनके सोने, पढ़ने, खेलने एवं दैनिक क्रियाओं का समय निश्चित होना चाहिए। किशोरावस्था तक आते-आते नियमित आदतें व्यवहार का रूप धारण कर लेती हैं। नियमित दिनचर्या का संतुलित विकास पर सकारात्मक प्रभाव दिखाई देता है।</p> <p>जब शिक्षा को प्रगतिशील जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है तो शिक्षा के अभिकरण के रूप में अनेक संस्थाओं को समन्वित किया जाता है जिनमें व्यक्ति जीवनपर्यन्त रहता है एवं जिनसे बालक उपयोगी और अनुपयोगी ज्ञान प्राप्त करता है। ये संस्थायें शिक्षा के अभिकरण या साधन कहलाते हैं। बाह्य अभिकरण के रूप में विद्यालय सर्वप्रथम बालक के सम्पर्क में आता है। प्रस्तुत शोध में सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों को सम्मिलित किया गया है।</p>
शोध का महत्व	<p>सामंजस्य पूर्ण रूप से समायोजित व्यक्ति ही राष्ट्र और समाज के कल्याण में सहायक हो सकता है। आज के विद्यार्थी भविष्य की समस्याओं का विश्वसनीय पूर्वानुमान नहीं कर सकते। आज समाज में बहुत तीव्रगति से परिवर्तन हो रहे हैं। भावी समस्याओं का अनुमान लगाकर उनसे सामंजस्य स्थापित करने की क्षमता आज के शिक्षार्थियों में उत्पन्न करनी होगी। कि जिन बच्चों के अभिभावक अपने पाल्यों के प्रशिक्षण और शैक्षिक आचरण के प्रति गंभीर रहते हैं। उनकी शिक्षा को महत्व देते हैं। उनको बच्चों में उच्च आत्मविश्वास, उच्च समायोजन क्षमता उच्च एवं आत्म प्रेरणा से भरे होते हैं। जब तक घर-परिवार, विद्यालय एवं समाज के बीच घनिष्ठ सम्बंध नहीं होगा। तब तक छात्र-छात्राओं में सरकार, मूल्य एवं उचित करणीय-अकरणीय कर्तव्यों की सीख नहीं दी जा सकती। बालको के व्यक्तित्व विकास में संतुलित जीवन और बहुआयामी सामंजस्य की स्थापना में परिवार व विद्यालय और समाज का सहयोग रहता है।</p> <p>मनुष्य के जीवन में आदतों का महत्वपूर्ण स्थान है। वह जन्मजात मूल प्रवृत्तियों से प्रेरित होकर आचरण व्यवहार करता है। और अलग-अलग प्रकार के वातावरण सम्पर्क में आकर बहुत सी नई आदतों को सीखता है। व्यक्ति में दो प्रकार की प्रवृत्तियाँ पाई जाती हैं। एक तो जन्मजात प्रवृत्तियाँ- जो उसके जन्म से ही उपस्थित रहती हैं। वातावरण के सम्पर्क में आकर उनका विकास होता है। दूसरी प्रवृत्ति अर्जित होती है। अर्जित प्रवृत्तियाँ एक प्रकार का व्यवहार होता है। जिसे व्यक्ति बार-2 दोहराकर उसे अपने स्थायी आचरण का भाग बना लेता है। जिसे मनोवैज्ञानिक भाषा में आदत कहा जाता है। ये आदतें धीरे-2 व्यक्ति के स्वभाव का अंग बन जाती हैं। आदत एक स्वचालित व्यवहार है। जिसे मनोवैज्ञानिक जेम्स ने “मनुष्य का दूसरा स्वभाव” कहा है। अध्ययन में अभिभावकों की सहायता न मिलने और कठिन विषयों की समस्याओं का समाधान समय पर न होने के कारण छात्र अध्ययन के प्रति गंभीर नहीं हो पाते हैं।</p> <p>प्रस्तुत अध्ययन छात्र- छात्राओं में सामंजस्य एवं अध्ययन आदतों के बीच सम्बन्ध को जानने के प्रयास से किया गया है।</p>

साहित्यावलोकन

1. जैन और भट्ट (2020) ने अध्ययन में पाया कि माता-पिता का सहयोग व साथ बच्चों में सुरक्षा और संरक्षण एवं संतुलित विकास का निर्माण करता है किसी एक अभिभावक या दोनों अभिभावकों की अनुपस्थिति में बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य प्रभावित होता है जो उनकी शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति पर भी प्रभाव डालता है।
2. चौरसिया, वन्दना (2019) अध्ययन की अच्छी आदतें और रवैया में कभी-2 पाया गया कि छात्रों की शैक्षणिक उपलब्धि अंको के आधार पर उच्च हो सकती है किन्तु इसके लिये यह आवश्यक नहीं कि उसकी अध्ययन आदत उच्च स्तर की हो। उपलब्धि का दूसरा मापदण्ड विषय का पर्याप्त ज्ञान और सक्षम होना भी आवश्यक है। शिक्षार्थी चाहे किसी भी बोर्ड में अध्ययन करे अभिभावकों की अपेक्षाये, प्रेरणा सभी छात्रों के लिए समान करती है।
3. प्रजापति, हीरल. (2019) ने संयुक्त परिवार छात्रों में समायोजन की अधिक संभावनाएँ पायी गई। संयुक्त परिवारों का सौहार्दपूर्ण वातावरण बालकों में सामंजस्य क्षमता और मानवीय मूल्यों में वृद्धि करता है संयुक्त परिवारों में सभी सदस्य एक-दूसरे की साथ तारतम्य बैठाना सीख जाते हैं।
4. वाधवान, कोमपाल (2018) ने पाया कि जिन परिवारों में स्नेह व प्रेम का वातावरण होता है, वहाँ के बच्चे अधिक समायोजित होते हैं। संवेगात्मक स्थिरता और शैक्षिक समायोजन का आपस में महत्वपूर्ण संबंध है शैक्षिक समायोजन विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों में सहायता करता है किशोरावस्था जीवन कौशल प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण काल है।
5. पाठक एवं अन्य (2018) किशोरावस्था बालकों के मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक परिपक्वता की अवस्था है सामंजस्य की क्षमता का विकास अपने आस-पास के व्यक्तियों एवं परिस्थितियों के साथ सकारात्मक संबंध की स्थापना करना है। शारीरिक और सामाजिक आवश्यकतों के अनुरूप संतुलन की स्थापना सामंजस्यपूर्ण व्यवहार कहलाता है।
6. बोरो, विरीना (2017) अध्ययन में पाया कि जिन परिवारों में विद्यार्थियों को विचारों को व्यक्त करने की आजादी होती है। वहाँ उनकी सामंजस्य क्षमता उत्तम होती है। सामाजिक समायोजन की क्षमता छात्रों से अधिक होती है शैक्षिक समायोजन में छात्र एवं छात्राओं दोनों को समान रूप से समायोजन समस्याओं का सामना करना पड़ता है। लिंग के आधार पर छात्राएँ शैक्षिक समायोजन में छात्रों से आगे रहती हैं।
7. सिंह, अंशुबाला (2017) शोध में पाया कि परीक्षा के समय छात्रों में चिन्ता और तनाव का स्तर बढ़ जाता है। इसलिए पारम्परिक शिक्षा प्रणाली की जगह आधुनिक एवं प्रमाणिक मूल्यांकन पद्धति का विकास किया जाना चाहिए। जो छात्रों के साथ न्याय कर सकें।
8. शेखर एवं लॉरेंस (2016) शोध अध्ययन विद्यार्थियों के संवेगात्मक, सामाजिक एवं शैक्षिक समायोजन में तालमेल के लिये अध्यापकों एवं अभिभावकों के समय समय पर निर्देशन उपलब्ध कराना चाहिये। किशोरावस्था में मनोवैज्ञानिक सहयोग बालकों के विकास में सन्तुलित वृद्धि करता है।
9. नराहारी और तिवारी (2015) ने अध्ययन में किशोर छात्र-छात्राओं में उच्च अध्ययन आदतों के लिये निर्देशन और मार्गदर्शन प्रक्रिया को आवश्यक किया जाने का सुझाव दिया।
10. सेल्वी, बी तामिल एवं राजगुरु, एस (2010) अध्ययन में पाया गया कि छात्र घर, शिक्षा, समाज और भावनाओं का समायोजन उनकी शैक्षणिक उपलब्धि को प्रभावित करता है।

शोध में प्रयुक्त शब्दों का अर्थ**सामंजस्य**

सामंजस्यपूर्ण व्यवहार का विकास मात्र शिक्षा के द्वारा ही किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही व्यक्ति अपने वातावरण और परिस्थितियों के साथ सामंजस्य करना सीखता है शिक्षा न केवल सामंजस्य सिखाती है वरन सामंजस्य शक्ति के वृद्धन भी करती है। सामंजस्य का आधार गृह, स्वास्थ्य, विद्यालय, संवेगात्मक एवं सामाजिक आयाम के आधार पर देखा गया है।

अध्ययन आदत

व्यक्ति द्वारा जीवन में जो भी व्यवहार किया जाता है तो उसका आधार आदत ही होती है व्यक्ति जब किसी कार्य को बार-बार करता है, तो उस क्रिया में स्थायित्व आ जाता है, और वह काम आदत में बदल जाता है। आदत व्यक्ति के व्यक्तित्व का निर्धारण करती है व्यक्ति द्वारा कार्यों का निस्पादन आदत द्वारा ही किया जाता है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन।
3. अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदतों पर प्रभाव का अध्ययन।

शोध परिकल्पना

1. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदतों पर सार्थक अंतर नहीं है।
2. शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं है।
3. अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदतों पर सार्थक प्रभाव नहीं है।

शोध अभिकल्प एवं शोध प्रक्रिया

प्रयुक्त शोध में न्यादर्श में झाँसी शहर के सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत 600 शिक्षार्थी (300 बालक एवं 300 बालिकाएं) लिए गये हैं। आकड़ों का चयन में विद्यालयों का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा एवं न्यादर्श को सुविधा चयन विधि से चयनित किया है। शोध उपकरण में सामंजस्य क्षमता के मापन के लिए डा0 ए0 के0 सिंह एवं डा0 ए0 सेन गुप्ता (HSAI) द्वारा रचित हाईस्कूल सामंजस्य अनुसूची एवं अध्ययन आदतों के मापन के लिए डिम्पल रानी एवं एम. एल. जायका द्वारा रचित अध्ययन आदत स्केल (SHS-DRJ) को लिया गया है। शोध में स्वतन्त्र चर सरकारी और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय है एवं आश्रित चर कक्षा नौ एवं दस में अध्ययन कर रहे शिक्षार्थी है। आकड़ों का विश्लेषण में प्रोडक्ट मूवमेन्ट सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया है। सारणी मूल्य को सार्थकता स्तर .05 पर सहसंबंध गुणांक के मान के साथ मापन किया गया है।

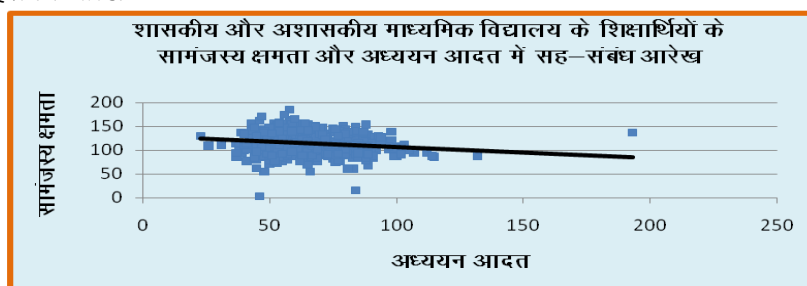
आकड़ों का विश्लेषण एवं परिणाम

सारणी सं0 01 शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य का उनकी अध्ययन आदत परीक्षण सारणी

सारणी सं0 01

शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थी	चर	N	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सारणी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिणाम
	सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत	600	- 0 .168	0.088	.05	स्वीकृत

उपरोक्त परिगणित विश्लेषण सारणी से स्पष्ट है, कि माध्यमिक स्तर के शासकीय और अशासकीय शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत के बीच पियर्सन सहसंबंध गुणांक मान -0.168 प्राप्त हुआ है। जो df (598) के .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 0.88 से अत्यधिक कम है। शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों की सामंजस्य क्षमता और अध्ययन आदत के मध्य अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सह-सम्बन्ध प्राप्त हुआ है।

सहसंबंध आरेख 01

सारणी सं0 02 शासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत परीक्षण सारणी

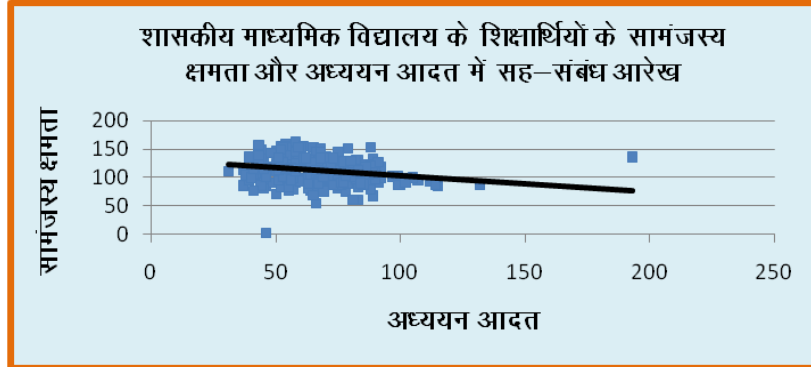
सारणी सं0 02

शासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थी	चर	N	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सारणी मूल्य	सार्थकता स्तर	परिणाम
	सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत	300	-0.219	0.088	0.05	स्वीकृत

उपरोक्त परिगणित विश्लेषण सारणी 02 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के शासकीय शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत के बीच पियर्सन सहसंबंध गुणांक का मान -0.219 प्राप्त हुआ है। जो df(598) के .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 0.88 से अत्यधिक कम है। जिसके आधार

पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है, अंतः स्पष्ट है कि शासकीय माध्यमिक विद्यालय के शिक्षार्थियों की सामंजस्य क्षमता और अध्ययन आदत एक दूसरे से निम्न ऋणात्मक सहसंबंध रखती है।

सहसंबंध आरेख 02



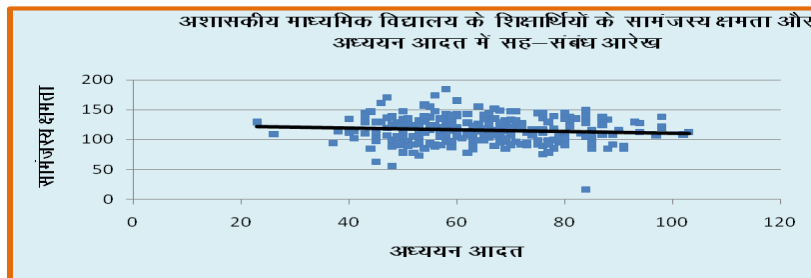
सारणी सं0 03 अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत परीक्षण सारणी

सारणी संख्या 03

अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षार्थी	चर	N	सहसम्बन्ध गुणांक (r)	सारणी मूल्य	सार्थकता स्तर .05	परिणाम
सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत		300	- 0.092	0.088	.05	स्वीकृत

उपरोक्त परिगणित विश्लेषण सारणी 03 से स्पष्ट है कि माध्यमिक स्तर के अशासकीय शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता एवं अध्ययन आदत के बीच परियसन सहसंबंध गुणांक का मान -0.092 प्राप्त हुआ है। जो df(598) के .05 सार्थकता स्तर पर सारणी मूल्य 0.088 से अत्यधिक कम है। जिसके आधार पर शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है, अंतः यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षार्थियों के सामंजस्य क्षमता और अध्ययन आदत एक दूसरे को प्रभावित करती है एवं एक दूसरे से अत्यन्त निम्न ऋणात्मक सहसंबंध रखती है।

सहसंबंध आरेख सं0 03



निष्कर्ष

- शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की सामंजस्य क्षमता और अध्ययन आदतों में निम्न स्तरीय ऋणात्मक सहसंबंध पाया गया है संभवतः सामंजस्य क्षमता के स्तर में परिवारिक की सामाजिक-आर्थिक स्तर, अभिभावकों का शिक्षार्थियों के साथ अनुकूलन का स्तर, अध्यापकों का व्यवहार, विद्यालय का वातावरण, पाठ्यसहगामी क्रियाओं में शिक्षार्थियों की सहभागिता का स्तर, मित्र समूह के साथ संबंध आदि कारक प्रभावी हो सकते हैं। जो अध्ययन के प्रति लापरवाही अथवा नियमित अध्ययन नहीं कर पाते।
- शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों की वैचारिक स्वतन्त्रता का स्तर, सांवेगिक परिपक्वता का स्तर, भौतिक संसाधनों की उपलब्धता,

बोल-चाल की भाषा, समस्याओं को हल करने की परिवार स्तर, अध्ययन के समय थकान आदि कारण प्रभावी हो सकते हैं। अध्ययन में संसाधनों की उपलब्धता सकारात्मक प्रभाव डालती है।

3. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों का अध्ययन करने का समय, अध्ययन का तरीका, नोट्स बनाने की आदत, कठिन विषयों को हल करने में आने वाली समस्याओं के प्रति अभिवृत्ति, पाठ के अभ्यास का तरीका, विद्यालय में शिक्षकों का व्यवहार, शैक्षिक अभिप्रेरणा आदि कारक प्रभावी हो सकते हैं।
4. शासकीय और अशासकीय माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत शिक्षार्थियों का मानसिक स्तर, स्वास्थ्य का स्तर, प्राथमिक कक्षाओं में विषयों के प्रति अभिवृत्ति, अध्ययन का लक्ष्य विहित होना, नियमित अध्ययन न करने की आदत, विद्यालय और अध्यापकों द्वारा पर्याप्त ध्यान न दिया जाना, विषय में कमजोरी से कुंठा, तनाव और चिन्ता का होना आदि कारक प्रभावी हो सकते हैं।

शैक्षिक सुझाव

शिक्षार्थियों को उत्तर में अध्ययन आदतों के विकास के लिए अध्ययन की पूर्व योजना का निर्धारण कर लेना चाहिए। समय एवं परिस्थिति अनुसार उसमें परिवर्तन किया जा सकता है। अध्ययन का समय निर्धारित होना आवश्यक है क्योंकि मानसिक और सांवेगिक जैविक घड़ी के अनुसार समय पर किये कार्य का सकारात्मक उत्पादन होता है शिक्षार्थियों द्वारा लक्ष्य निर्धारित करके किये गया कार्य प्रभावी परिणाम प्राप्ति में सहायक होता है। कठिन विषयों को प्रारम्भिक स्तर पर करने से संचित ऊर्जा और शक्ति द्वारा सकारात्मक परिणाम प्राप्त किया जा सकता है अध्ययन के संक्षिप्त नोट्स को बनाना, प्रत्येक विषय को समय देना, अध्ययन के उपरान्त नियत समय पर अभ्यास करना, अध्ययन में आने वाली समस्याओं को अध्ययन के समय नोट करते जाना एवं अंत में अध्यापक से समस्याओं का निराकरण कर लेना आवश्यक होता है अध्ययन आदतों में रटने की आदत के बजाय दक्षता प्राप्ति पर ध्यान देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. Jain, Bishma and Bhatt, Manzoor A. (2020) *Impact of Mental health, Study habit and Academic Achievement of Orphan and Non orphan Adolescent : A Review; International journal of creative Research Thoughts (IJCRT); 8(2); P-630-633*
2. Chaurasia Vandana (2020) "The level of study habits and Attitude of secondary students will be satisfactory" *Jiwaji University, Gwalior (MP)*
3. Hiral Prajapati.(2019) "Adjustment among high school students" *The International Journal of Indian Psychology; 7(2); p-816-821, ISSN 2348-5396*
4. Wadhawan, Kompal. (2018) "A study of emotional, social and educational adjustment of senior secondary students of Panchkula" *The International Journal of Research in Social Science ; 8(4); P-793-803, ISSN 2249-2496*
5. Pathak, N.,Tware, J.R & Patel, N.(2018) *A Study on association between adjustment and achievement of adolescent studying in different types of educational boards: International Journal of sciences and Research (IJSR); 7(2): P- 691-695, ISSN- 2319-7064*
6. Boro, Birina..(2017). *Adjustment problems of secondary school students of Gorkha community with respect to gender –A study: International Journal of Applied Research ; 3(8) ; P- 341-344, ISSN- 2394-7500*
7. Sekar & Lawrance. (2016) *Emotional, Social, Educational adjustment of higher secondary school students in relation to academic achievement: i-manager's Journal on Educational Psychology; 10(1); P-29-34*
8. Singh, Anshu Bala & Ahmad , Jarrar .(2017). *A Study of attitude towards continuous & comprehensive evaluation of senior secondary school students in relation to their study habits: International Journal of humanities and social science Invention; 4(6). P-33-35 ISSN (online): 2319-7722*
9. सेल्वी,बी तामिल एवं राजगुरु, एस (2010)"कॉलेज स्तर छात्रों की समायोजन समस्याओं एवं अकेडमिक उपलब्धि का अध्ययन" आई मैनेजर जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकोलॉजी: 4(1): पृष्ठ 45-51